"ज़रूरी है ईश्वर का सानिध्य"

राजयोगिनी दादी जानकी जी

'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' के कार्यों का संचालन करने एवं संस्थान के विकास के लिए तत्पर राजयोगिनी दादी जानकी जी का जीवन अनूठा रहा है। धर्म, आध्यात्म और मानव सेवा कार्यों के प्रति अपने जीवन को समर्पित कर चुकीं दादी जानकी जी, आज अपने आध्यात्मिक ज्ञान व अनुपम कार्यों से समाज में फैली रूढ़ीवादी परम्पराओं को दूर कर, लोगों के जीवन में प्रेम, स्नेह, आनंद, खुशी और सौहार्द्र की भावना पैदा कर रही हैं। उनकी प्रेरणा एवं उनके निर्देशन में आज दुनिया के करीब 130 देशों में ईश्वरीय केंद्रों की स्थापना कर, मानव के सर्वांगिण विकास के लिए बेहतर कार्य किये जा रहे हैं। स्वयं माता राजयोगिनी दादी जानकी जी अपने अनुपम कार्य व धर्म, आध्यात्म ज्ञान के बारे में क्या कहती हैं? आइये जानते हैं...

'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' की मुख्य प्रशासिका के रूप में काम करना आपको कैसा लग रहा है?

यह संस्था स्वयं परमपिता परमात्मा शिव द्वारा स्थापित है, इसलिए इसका नाम 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' रखा हुआ है। स्वयं जगतपिता ही इस संस्था को चला रहे हैं। मुझे गर्व होता है कि हम इस महान कार्य में लगे हुए हैं। हमारा जीवन श्रेष्ठ बन रहा है और दूसरों के जीवन को श्रेष्ठ बनाने का अवसर प्राप्त हुआ है।

बचपन से आप बहुमुखी प्रतिभा की धनी रही हैं। आज आप एक ऐसी आध्यात्मिक संस्था का नेतृत्व कर रही हैं, जो दुनिया भर में करीब 130 देशों में स्थापित है। इस ज़िम्मेदारी को आप कैसे मैनेज करती हैं?

सच कहूं तो मुझे कभी भी नहीं लगता कि मैं इतनी बड़ी संस्था का संचालन कर रही हूं, बल्कि ट्रस्टी और निमित्त बनकर सेवा कर रही हूं। बाकी सेवा कराने वाला परमात्मा है। हम तो कठपुतली ही हैं, जैसा ईश्वर का निर्देश मिलता है, मैं उसी तरह करने का प्रयास करती हूं। पूरी संस्था की बागडोर परमात्मा स्वयं संचालित करता है। यह भाव सहज ही हमें हल्का बनाकर रखता है।

धर्म, आध्यात्म एवं मानव सेवा कार्यों के प्रति आपका रूझान कब हुआ?

मैं एक धर्म परायण परिवार में पैदा हुई हूं। मैं ज्वैलर के घर में पैदा हुई, परन्तु गहना कभी नहीं पहना। बचपन से ही हमें ईश्वर और समस्त मानव जाति के उत्थान के प्रति रूझान था। 21 वर्ष की उम्र में मैं संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के सम्पर्क में आई। तब से मैंने अपने जीवन का निर्णय लिया कि मैं पूरे विश्व में जाकर मानवता की सेवा करूंगी। इसके पश्चात् सन 1937 में संस्था के प्रारम्भ काल में इस संस्था में समर्पित हो गयी।

वर्तमान में आधुनिकीकरण, नारीवाद और महिला उत्थान जैसी तमाम बातें होती हैं, लेकिन आज महिलाओं की जो स्थिति है, उसके बारे में आपकी क्या राय है?

कहा गया है कि *यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता* अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। यही सही है कि महिला अबला नहीं, बल्कि सबला है। नारी में इतनी शक्ति है कि वह चाहे तो दुर्गा, काली, सरस्वती और लक्ष्मी बन सकती है, इसलिए तो इस परमात्मा ने ज्ञान का कलश माताओं-बहनों के सिर पर रखा है। नारी स्वर्ग का द्वार है, शक्ति स्वरूपा है। इस संस्था में समर्पित 26 हजार बहनों ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि विश्व का परिवर्तन करने में हम सक्षम हैं। आज नारी भौतिक क्षेत्रों में तो तरक्की कर रही हैं, परन्तु उन्हें शक्ति स्वरूपा बनने के लिए